संदेश

प्रो. विपिन कुमार अग्रवाल
प्राचार्य, श्री अरबिंदो कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रतिष्ठार्थ
आदरणीय श्री आलोक कुमार जी,
संरक्षक, दधीचि देहदान समिति, नई दिल्ली

शरीर मृत्यु के बाद केवल एक निष्क्रिय वस्तु नहीं है—यह दूसरों के जीवन को बचा सकता है, उन्हें नया जीवन दे सकता है। इसी भाव को केंद्र में रखकर कार्य कर रही है दधीचि देहदान समिति, जिसने भारत में अंग, नेत्र, देह और स्टेम सेल दान को एक सामाजिक आंदोलन का रूप दिया है।

यह संस्था 1997 में आधिकारिक रूप से पंजीकृत हुई और तब से अब तक हजारों स्वयंसेवक समाज को इस दिशा में प्रेरित कर रहे हैं। इस आंदोलन के प्रेरणा-स्रोत और संरक्षक आप स्वयं—श्री आलोक कुमार जी—हैं, जिन्होंने न केवल इस पहल को जन्म दिया, बल्कि पिछले कई दशकों से इसे जीवन-ध्येय की भाँति निभाया है। एक आध्यात्मिक व्रत की तरह इस संकल्प को जीते हुए आपने विधायक के रूप में अपने व्यस्त सार्वजनिक जीवन में भी इस मिशन को सदैव जीवित रखा।

इसी अभियान के अंतर्गत 12 फरवरी 2025 को दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध श्री अरबिंदो कॉलेज (ईवनिंग) की एनएसएस इकाई 'टीम समर्पण' द्वारा आयोजित वार्षिक उत्सव तरंग 2025 में दधीचि देहदान समिति ने सक्रिय सहभागिता की। इस वर्ष की थीम थी—"जीवन का उपहार – अंगदान"।

कार्यक्रम में समिति की उपाध्यक्ष श्रीमती मंजु प्रभा और विशेषज्ञ डॉ. रेनू चौहान ने विद्यार्थियों को अंगदान के वैज्ञानिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पक्षों से अवगत कराया। रंगोली, डिजिटल पोस्टर, नारा-लेखन और एनएसएस प्रेजेंटेशन जैसी प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्र-छात्राओं ने रचनात्मक रूप में अंगदान का संदेश दिया और इस अभियान से जुड़ने का संकल्प लिया।

इस आयोजन ने छात्रों को नई दिशा प्रदान की। प्रेरणा इतनी प्रबल रही कि महाविद्यालय ने इसे प्रतिवर्ष आयोजित करने का निर्णय लिया, ताकि छात्रों के साथ-साथ समाज में भी व्यापक जागृति उत्पन्न हो सके। निःसंदेह, यह संस्था एक जन-जागरण अभियान के रूप में विकसित होकर समाज और राष्ट्र को गौरवान्वित करेगी। छात्रों में नैतिक मूल्यों के साथ-साथ आध्यात्मिक और सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पण विकसित करना ही समिति का प्रमुख उद्देश्य है।

मैं आपके सेवा और समर्पण भाव से गहराई से अभिभूत हूं। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आपकी संस्था मार्तंड की आभा के समान सदैव दीप्तिमान रहकर समाज में सेवा और त्याग की प्रेरणा देती रहे।

सादर